Ma Baglamukhi Yagya (Homam) Vidhi

मां बगलामुखी हवन पद्धति

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal

9917325788, 9540674788

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.baglamukhi.info

www.yogeshwaranand.org

Copyright @ Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal
Mob - 9917325788 , 9540674788
www.baglamukhi.info , Email : shaktisadhna@yahoo.com

श्री योगेश्वरानन्द जी एवं सुमित गिरधरवाल जी द्वारा लिखित पुस्तकें –

1 – बगलामुखी साधना और सिद्धि

2 – षोडशी महाविद्या श्री यंत्र पूजा पद्धति

3 – मंत्र साधना

4 – षटकर्म विधान

5 – आगम रहस्य

6 – श्री तारा तन्त्रम

7 – बगलामुखी तन्त्रम

8 – यन्त्र साधना

9 – श्री कामाख्या रहस्यम्

10 – श्री प्रत्यगिंरा साधना

11 – श्री धूमावती साधना और सिद्धि

12 – शाबर मंत्र सर्वस्व

यहां पर जो बगलामुखी यज्ञ की विधि प्रस्तुत कर रहें हैं वह हमारी पुस्तक बगलामुखी तंत्रम से ली गयी है।

Copyright @ Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal
Mob - 9917325788 , 9540674788
www.baglamukhi.info , Email : shaktisadhna@yahoo.com

अध्याय 24

श्री बगलामुखी-हवन पद्धति

मन्त्र के पुरश्चरण का एक आवश्यक अंग हवन भी है। नियत संख्या में मन्त्र-जप कर लेने के उपरान्त जप की कुल संख्या के दशांश मन्त्रों से हवन करने का विधान है। मन्त्र के साथ-साथ हवन करने का फल अलग से प्राप्त होता है। इसके साथ ही साथ यह भी विधान है कि **यदि साधक हवन करने में अक्षम हो तो वह जप-संख्या के दशांश हवन करने के स्थान पर उससे दो गुनी संख्या में जप कर सकता है। यह भी कहा गया है कि हवन समय में मन्त्र वीर्य का काम करता है तथा हवन-सामग्री में प्रयुक्त पदार्थ उसके वंशाणु के समान कार्य करते हैं, जिसके फलस्वरूप कर्मफल की प्राप्ति होती है और साधक का अभीष्ट सिद्ध होता है। इसलिए मन्त्र-सिद्धि के साथ उसके फल की प्राप्ति हेतु निर्दिष्ट द्रव्यों से हवन करना आवश्यक है। "मन्त्रैश्च मन्त्र-सिद्धिस्तु जप-होमार्चनाद् भवेत्।"**

अग्नि-जिह्वा-आवाहन : यज्ञ कर्म करते समय कामना के अनुसार ही अग्नि-जिह्वा का आवाहन किया जाता है। काम्य कर्म में 'राजसी जिह्वा', मारणादि क्रूर कर्मों में 'तामसी जिह्वा' तथा योग-कर्मों में 'सात्विक जिह्वा' का आवाहन किया जाता है।

राजसी जिह्वा : पद्मरागा, सुवर्णा, भद्रलोहिता, श्वेता, धूमिनी, कालिका।

तामसी जिह्वा : विश्वमूर्ति, स्फुर्लिंगिनी, धूम्रवर्णा, मनोजवा, लोहिता, कराला, काली।

सात्विक जिह्वा : हिरण्या, गगना, रक्ता, कृष्णा, सुप्रभा, बहुरूपा, अतिरिक्ता।

आकर्षण-कार्यों में 'हिरण्या', स्तम्भन कार्यों में 'गगना', विद्वेषण कार्य में 'रक्ता', मारणादि में 'कृष्णा', शान्ति कर्मों में 'सुप्रभा', उच्चाटन में 'अतिरिक्ता' तथा धनलाभ के लिए 'बहुरूपा' नामक जिह्वा का आवाह्न करके आहुति देनी चाहिए। **यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि होम करते समय अग्नि का वास पृथ्वी पर होना चाहिए।**

अग्नि-नाम : शान्ति-कार्यों में 'वरदा', पूर्णाहुति में 'मृडा', पुष्टि-कार्यों में 'बलद', अभिचार-कर्मों में 'क्रोध', वशीकरण में 'कामद', बलिदान में 'चूड़क', लक्ष होम में 'वह्नि' नामक अग्नि का आवाह्न किया जाता है।

दिशा-विधान : शान्ति, पुष्टि कर्मों में पूर्वमुख, आकर्षण कार्य में उत्तरमुख होकर वायुकोणस्थ कुण्ड में हवन करना चाहिए। विद्वेषण में नैर्ऋत्यमुखी होकर वायुकोणस्थ कुण्ड में होम करें। मारण-कर्म में दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशा में स्थित कुण्ड में होम करें। ग्रह, भूत आदि निवारण कर्म में वायुकोण की ओर मुख करके षट्कोण कुण्ड में हवन करना चाहिए।

हवन-कुण्ड-विधान

अलग-अलग फल-प्राप्ति के लिए अलग-अलग आकृति के कुण्डों में होम करने का विधान है, यथा–

वशीकरण में	**–**	**चौकोर कुण्ड**
आकर्षण में	**–**	**त्रिकोण कुण्ड**
उच्चाटन में	**–**	**त्रिकोण कुण्ड**
मारण में	**–**	**षट्कोण कुण्ड में होम करना चाहिए।**

लक्ष्मी-प्राप्ति, शान्ति, पुष्टि, विद्या-प्राप्ति, विघ्न निवारण हेतु चतुरस्र कुण्ड में होम करना चाहिए। वशीकरण, सम्मोहन, व्यापार, अर्थ-प्राप्ति, कीर्ति-वृद्धि के लिए त्रिकोणाकार कुण्ड में आहुति देने का विधान है। इसके अतिरिक्त विद्वेषण कर्म में वर्तुलाकार एवं उच्चाटन कर्म के लिए षट्कोण कुण्ड का निर्माण करना चाहिए। रक्षा-कर्म में चतुरस्र कुण्ड में हवन करें। हवन के लिए कुण्ड अथवा स्थण्डिल आवश्यक है–

उत्तमं कुण्ड-होमं च स्थण्डिलं चैव मध्यमम्।
स्थण्डिलेन विना होमं निष्फलं भवति ध्रुवम्॥

कर्म भेद से यज्ञ-सामग्री-विधान

बगलोपासना में अलग-अलग कामना हेतु अलग-अलग हवनीय-द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है। यथा–

प्रयोजन	यज्ञीय-सामग्री	विशिष्ट निर्देश/परामर्श
1. वशीकरण	मधु, तिल, लाजा, घी	मूल मन्त्र जप के बाद सरसों से दशांश होम
2. आकर्षण	लोध्र (नमक), तिल, शहद, घी, शक्कर	मन्त्र जप का दशांश
3. विद्वेषण	सरसों के तेल से युक्त नीम के पत्ते	जप की दशांश संख्या
4. स्तम्भन	नमक, हरताल एवं हल्दी	-यथोक्त-
5. मारण	चिता की अग्नि में सरसों का तेल तथा भैंस का रक्त	गृह-धूम के साथ कौए के पंखों से यह हवन करें।

प्रयोजन	यज्ञीय-सामग्री	विशिष्ट निर्देश/परामर्श
6. अभिचार कर्मों द्वारा भोग्य रोगशान्ति	ताजा घी, शहद, शक्कर, कुम्हार के चाक की मिट्टी व 4-4 अंगुल ऐरंड की लकड़ी	जप का दशांश हवन
7. आकर्षण	मधु, घी, शक्कर तथा नमक	बित्ते भर की योनि एवं मेखला निर्माण करके
8. स्तम्भन	हल्दी की गांठ	दस हजार की संख्या में होम
9. सन्तान-प्राप्ति	अशोक एवं करवीर के	दशांश संख्यांक पत्तों से
10. विजय-प्राप्ति	सेमर के फूल	दशांश संख्यक
11. राजा वशीकरण	गुग्गल तथा घी	दस हजार जप
12. कारागार से मुक्ति	गुग्गल तथा तिल	दशांश
13. ज्वरशांति	बगला-हृदय पाठ तथा मल्लिका पुष्पों से 108 हवन	108 आहुतियां तथा 11 पाठ
14. ज्ञान-प्राप्ति	बगला-हृदय पाठ तथा श्यमन्तक पुष्पों से होम	108 पाठ
15. पुत्र-प्राप्ति	बगुल पुष्पों से होम	दशांश
16. कुबेरवत् सम्पत्ति	कमल पुष्पों से होम	दशांश

प्रयोजन	यज्ञीय-सामग्री	विशिष्ट निर्देश/परामर्श
17. विजयार्थ	यन्त्र-पूजन एवं चम्पा पुष्पों से होम	दशांश

विशेष : शत्रु के स्तम्भन हेतु 'नाम' के साथ जप करना चाहिए। इस प्रयोग से बुद्धि, शस्त्र, देव-दानव एवं सर्प आदि का भी स्तम्भन हो जाता है। यथा–

"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं मम (अमुक नामकं) शत्रुं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।"

किसी भी मन्त्र का पुरश्चरण करते समय एक लाख की संख्या में जप, फिर उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश संख्यक ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर यथा-सम्भव दक्षिणा देनी चाहिए।

होम-प्रकरण

सर्वप्रथम षोडशमातृका-चक्र, सप्तघृत-मातृका-चक्र एवं नवग्रह-चक्र का निर्माण करें।

नवग्रह-चक्र

बुध 4. पीला	सफेद शुक्र 6.	सफेद चन्द्रमा 2.
गुरु 5. पीला	लाल सूर्य 1.	लाल मंगल 3.
केतु 9. काला	शनैश्चर 7. काला	राहु 8. काला

षोडशमातृका-चक्र

ईशान	पूर्व		आग्नेय
आत्मनः कुलदेवता 17.	लोक मातरः 13.	देवसेना 9.	मेधा 5.
तुष्टिः 16.	मातरः 12.	जया 8.	शची 4.
पुष्टिः 15.	स्वाहा 11.	विजया 7.	पद्मा 3.
धृतिः 14. तुष्टिः	स्वधा 10.	सावित्री 6.	2. गौरी 1. गणेश
वायव्य	पश्चिम		निर्ऋति

उत्तर — दक्षिण

सप्तघृत-मातृका-चक्र

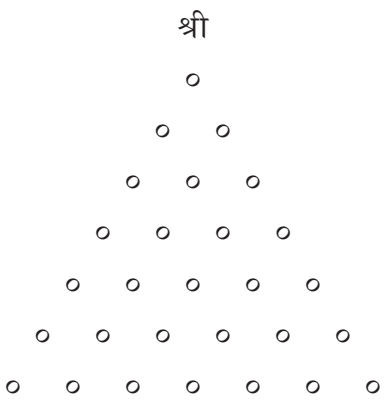

कीर्तिलक्ष्मी धृतिर्मेधा
स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते
सप्तैता धृतमातरः॥
(इति वसोर्धारा)

सर्वदेव पूजन

सर्वदेव पूजा में पंचायतन-पूजन का अधिक महत्व है। इसमें शिव, विष्णु, देवी, सूर्य और गणेश इन पांचों देवताओं का पूजन होता है। इस पूजा में (1) विष्णु के लिए शालिग्राम शिला और गोमती-चक्र (2) शिव के लिए बाणलिंग (3) गणेश के लिए लाल पत्थर (4) देवी के लिए कच्ची धातु का टुकड़ा (5) सूर्य के लिए स्फटिक पूजा के आधार माने गए हैं। इनमें शालिग्राम शिला और बाणलिंग के संस्कार की आवश्यकता नहीं होती शेष सभी का संस्कार करना पड़ता है।

देवपूजन के लिए वेदी का बनाना सर्वप्रथम आवश्यक होता है। शुद्ध भूमि में शुद्ध मिट्टी को रखकर गेहूं के आटे के द्वारा सवा हाथ लम्बी और सवा हाथ चौड़ी वेदी बनायी जाती है। उसमें ठीक दिशाओं में नवग्रहों का चिह्न इस प्रकार बनायें– मध्य में 52 अंगुल के अष्टदल से सूर्य, आग्नेय में 24 अंगुल का अर्द्ध गोलाकार चन्द्र, दक्षिण में 4 अंगुल के त्रिकोणाकार भौम, ईशान में 9 अंगुल के धनुषाकार बुध, उत्तर में 9 अंगुल के पद्माकार गुरु, फिर पूर्व में ही 9 अंगुल के चौकोर शुक्र, पश्चिम में 9 अंगुल खड्गाकार शनि, नैर्ऋत्य में 9 अंगुल के मत्स्याकार राहु, वायव्य में 9 अंगुल के ध्वजाकार केतु लिखकर– सूर्य, मंगल में लाल रंग, बुध व गुरु में पीला रंग, शुक्र-चन्द्रमा में सफेद रंग तथा राहु-केतु-शनि में काला रंग भरें। वेदी की उत्तर दिशा में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अग्नि और सोलह मातृकाओं का स्थापन करके दक्षिण दिशा में सर्प, पूर्व में इन्द्र तथा वायु और ईशान दिशा में कलश श्रीगणेश और 64 योगिनियों की भी

आग्नेय में ही स्थापना करें।

स्वास्तिक चिह्न में पीले चावल डालकर गणेश जी को रखें। इनसे ईशान में अष्टदल कमल में कलश रखें। कलश में जल भरकर आम, वट, पीपल, गूलर और जामुन– इन पांच पेड़ों के पत्तों को रखकर डोरी बांध दें और कलश पर डोरी बंधा नारियल रखकर लाल कपड़े से ढक दें।

पूजा करते समय यजमान का मुख पूर्व तथा ब्राह्मण का उत्तर की ओर होना चाहिए।

शेषनाग का मुख

भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक–इन तीन महीनों में पूर्व दिशा में रहता है। मार्गशीर्ष, पौष और माघ इन तीन महीनों में दक्षिण दिशा में रहता है। फाल्गुन, चैत्र और वैशाख इन तीन महीनों में पश्चिम दिशा में रहता है। ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण इन तीन महीनों में उत्तर दिशा में रहता है।

उत्तर पूर्व के मध्य को 'ईशान' दिशा कहते हैं। पूर्व व दक्षिण के मध्य में 'आग्नेय' दिशा कहा है। दक्षिण पश्चिम के मध्य की दिशा 'निर्ऋति' है। पश्चिम उत्तर के बीच की दिशा 'वायव्य' है। प्रातः सूर्योदय के समय आप सूर्य की ओर खड़े हों तो आपका मुख पूर्व की ओर, पीठ पश्चिम की ओर, दाहिना हाथ दक्षिण की ओर तथा बायां हाथ उत्तर दिशा में होगा। इस प्रकार से चार दिशाएं होती हैं। बीच वाली दिशाएं– उपदिशाएं कहलाती हैं।

सभी धार्मिक या सामाजिक कृत्यों के आरम्भ में कुछ क्रियाएं समान रूप से की जाती हैं। वे हैं– आत्म-शुद्धि, आसन-शुद्धि, संकल्प, ब्राह्मण पूजन, स्वस्ति-वाचन, मंगल-पाठ, गणेश पूजन, घटस्थापन, पुण्याह-वाचन, वरुण-पूजन। इसके अतिरिक्त किसी-किसी कर्म में नवग्रहपूजन, मातृकापूजन, नान्दीमुखश्राद्ध, कुशकण्डिका और हवन भी किया जाता है।

आत्म-शुद्धि

स्नान आदि करके कर्त्ता शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुंह

करके बैठें। तब **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥** यह मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर जल छिड़ककर आत्म-शुद्धि करें। पश्चात्–

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः पढ़कर तीन बार आचमन करें। **ॐ गोविन्दाय नमः हस्तौ प्रक्षालयात्** कहकर हाथ धो लें।

आसन-शुद्धि

इसके बाद हाथ में जल लेकर यह विनियोग करें। **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्रकरणे विनियोगः।**

फिर यह मन्त्र पढ़कर आसन पर जल छिड़ककर आसन शुद्धि करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।

संकल्प

ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽन्हि द्वितीय (परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह-कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षेआर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे अमुक संवत्सरे अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्माऽहं* अमुक नाम्नः (प्रतिनिधित्वेन वा) अमुक कामनासिद्धये अमुक (नामकर्मणि) तदंगतया विहितनिर्विघ्नतार्थं यथा सम्पादितसामग्रया स्वस्तिवाचनं

---

* ब्राह्मण शर्माहं, क्षत्रिय वर्माहं, वैश्य गुप्तोहं इस प्रकार बोलें। दूसरे के लिए किया जाए तो 'करिष्यामि' कहें।

गणेशवरण-सूर्यादिनवग्रहषोडशमातृकापूजनादि च करिष्ये।

अपने दाहिने हाथ में चावल, जल लेकर संकल्प करें।

वेदोक्त मंगल मन्त्रों को पढ़ने के बाद कर्त्ता कलश में जल भरकर उसे वेदी में स्थापित करें। फिर उस पर एक पात्र में जौं भरकर रखें और उसके ऊपर घी का दीपक जला दें। कलश पर रोचना या हल्दी से गणेश की आकृति बनाएं। भूमि पर ग्रहों और मातृकाओं की पूजन के लिए उनके 'चक्र' बनायें। इसके बाद पूजन प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा करें।

कलश की जगह पर मिट्टी और जौं रखकर कलश रखें और उसमें जल, सुपारी, पैसा, सर्वोषधि, सप्तमृत्तिका दुर्वा, कुश, पञ्चपल्लव डालकर कलश के गले में वस्त्र अथवा मौली (नाला) बांधकर प्रार्थना करें–

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमि स्वास्ति नो बृहस्पतिद्दधातु॥

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा॥

ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः

सर्वँ शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि॥

ॐ व्विश्वानि देव सवितद्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः। यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्ट्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।

ॐ एतन्ते देव सवितय्यज्ञ म्प्राहुर्ब्बृह स्पतयेब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञ पतिन्तेन मामव॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञामिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु। विश्वे देवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजंते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥

इसके बाद अपने हाथ में जल लें।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

गंगा आदि तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ गंगादिसरिद्भ्यो नमः

जल, चन्दन, चावल और फूल से पूजा प्रार्थना करें।

ब्राह्मण पूजा

अपने दोनों हाथों को पसारकर फूल रख मन्त्र पढ़ें–

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव।

तद्पोपरान्त रोली के छींटे देकर पूजन करें और यह मन्त्र पढ़ें–

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रानाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुग धारिणे नमः॥

जल, चन्दन, चावल, पुष्प आदि से ब्राह्मण की पूजा करें। ब्राह्मण यजमान को तिलक करें।

ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु॥ रक्षन्तु त्वां सुराः सर्वे सम्पदे सुस्थिरा भव॥

स्वस्तिवाचन तथा शान्ति पाठ पढ़ें। (पृष्ठ 346 से)

दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीना च देवताः॥
तन्मन्त्रं ब्राह्मणाधीनं तस्माद् ब्रह्माण देवताः॥

गणेश पूजन

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः। ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ गणानात्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियणांत्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधोनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य

न जायते॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्ननोपशान्तये॥ अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनं हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थो जनार्दनः॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्द्धरः। तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

स्मृतेः सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥ विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः॥

अब इस मन्त्र से सामग्री चढ़ायें।

सामग्री के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं–

पाद्यम् अर्घ्यमाचमनीयम्, वस्त्रम् यज्ञोपवीतम्, गन्धाक्षतान्,

पुष्पम्, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यम्, ताम्बूलम्, पूंगीफलम्, दक्षिणां च समर्पयामि।

कलश पूजन

अपने दायें हाथ में फूल लेकर मन्त्र पढ़ें–

प्रभासं पुष्करं चैत्र नैमिषं च हिमालयम्। वटेश्वरं त्रिभुक्तं च कुम्भमावाहयाम्यहम्।

इस मन्त्र से रोली के छींटे दें।

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो-व्वरुणास्यऽऋृतसदन्न्यसि व्वरुणस्यऽऋृतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋृतसदनमासीद॥

इसके बाद इस मन्त्र से सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

"पाद्यम्अर्घ्यमाचमनीयम्" (पृष्ठ 349-350)

देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भृतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृका॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥

ओंकार पूजन

हाथ में फूल, चावल लेकर ओंकार का आवाह्न करें।

आवाहयाम्यहं देवं ओंकारं परमेश्वरम्। त्रिमात्रं त्र्यक्षरं दिव्यं त्रिपदञ्च त्रिदेवकम्॥

फूल, चावल चढ़ा दें। इस मन्त्र से रोली से छींटे देकर पूजन करें।

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः॥

इस मन्त्र को पढ़ते हुए सब सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयं शुभम्। त्र्यर्णवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम्॥

॥ ब्रह्म-पूजन ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचों वेनऽआवः। सबुद्ध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।

॥ विष्णु-पूजन ॥

हाथ में फूल, चावल लेकर आवाहन करें।

केशव पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसुदनम्। रुक्मिणीसहितं देवं विष्णु आवाहयाम्यहम्।

पुष्प चढ़ाकर इस मन्त्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेऽस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

पूजन के बाद–

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्॥ (पूर्ववत्)

समस्त सामग्री चढ़ाकर इस मन्त्र द्वारा हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।

।। शिव-पूजन ।।

हाथ में चावल लेकर यह मन्त्र पढ़ें।

ॐ शिवशंकरमीशानं द्वादशार्द्धं त्रिलोचनम्। उमयासहितं देवं शिवं आवाहयाम्यहम्।

पुष्प और चावल चढ़ा दें।

इस मन्त्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाम च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च।

इसके बाद–

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्।। (पूर्ववत्)

इत्यादि मन्त्र से सब सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़कर इस मन्त्र द्वारा नमस्कार करें।

रुद्राक्ष कंकणलसत्करदण्डयुग्मं, मालान्तरालचितभस्मधृतं त्रिपुण्डम्। पंचाक्षरी परिपठम् वरमन्त्रराज ध्यायेत्सदा पशुपतिं शरणं व्रजेऽहम्।

तत्पश्चात् ॐ नमः शिवाय का जप करें।

।। लक्ष्मी-पूजन ।।

हाथ में चावल, फूल लेकर लक्ष्मी जी का आवाहन करें।

ॐ समुद्रतनयां देवीं सर्वाभरणभूषिताम्। पद्मनेत्रां विशालाक्षीं लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्।। विष्णुप्रीतिकरीं देवीं देवकार्यार्थसाधनीम्। कुबेरधनदात्रीं लक्ष्मीं आवाहयाम्यहम्।

सभी फूल, चावल चढ़ा दें और हाथ पसारकर कहें।

आगच्छ भगवति देवि स्थाने चात्रस्थिरा भव। यावत्पूजां

करिष्येऽहं तावत्त्वं सुस्थिरा भव।

इस मन्त्र से रोली के छींटे दें।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इषणन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण।

इसके बाद–

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पूर्ववत्)

सब सामग्री चढ़ा हाथ जोड़कर इस मन्त्र द्वारा नमस्कार करें।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व-लक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

षोडशमातृका पूजन

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ हृष्टि पुष्टि स्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता॥ गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पुज्याश्च षोडश॥

पूजन के बाद–

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम्। (पूर्ववत्)

सामग्री चढ़ायें।

वास्तु पूजन

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा। वासुक्यादि अष्टकुल नागेभ्यो नमः।

योगिनी पूजन

रोली से छींटे देकर पूजन करें।

आवाहयाम्यहं देवीः योगिनीः परमेश्वरीः। योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यानसमन्विताः।

इससे सामग्री चढ़ावें और हाथ जोड़ प्रार्थना करें।

दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वाला त्रिलोचना। मूर्ति-मतीह्यमूर्त्ता च उग्रा चैवोग्ररूपिणी।। अनेकभावसंयुक्ता संसारार्णवतारिणी। यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः। दिव्ययोगी-महायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी। प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशाचरी। हुंकारी सिद्धवेताली खर्परी भूतगामिनी। उर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांस-भोजिनी।। फूत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया। रक्ता च घोर-रक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी। चौरिका भारिका चण्डी वाराही मुण्डधारिणी। भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवासिनी। कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी। कुण्डला ताल कौमारी यमदूती करालिनी। कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यन्त्रवाहिनी। दुर्घटा विकटा घोरा कपाला विषलंघना। चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः त्रैलोक्यपूजिता नित्यं देवमानुषयोगिभिः।।

इन्द्र पूजन

रोली से छींटे देकर पूजन करें।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा

धात्त्विन्द्रः स्वाहा॥ ॐ इन्द्राय नमः।

इस मन्त्र से सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

वायु पूजन

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वां सोमपीतये॥

ॐ वातोवामनो वा गन्धर्वाः सप्तवि ँशतिः। तेऽअग्रेश्वमयुञ्जंस्तेस्मिञ्जवमादधुः। ॐ वायवे नमः।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

सामग्री चढ़ा दें।

अग्नि पूजन

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐ अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासोऽअदाभ्यम्। चित्रावासो स्वस्ति ते पारमशीय॥ ॐ श्री अनलाय नमः।

इस मन्त्र से सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

धर्म पूजन

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय। धर्मराजसभा-संस्थं कृताकृत-विवेकिनम्॥ ॐ धर्माय नमः।

यम पूजन

रोली का छींटा देकर पूजन करें।

ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितोगुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते दिवि बन्धनानि। ॐ यमाय नमः।

सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

सूर्य पूजन

हाथ में फूल लेकर कहें–

दिवाकरं सहस्रांशुं ब्रह्माद्याश्च सुरैर्नुतम्। लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्यं आवाहयाम्यहम्।।

फूल, चावल चढ़ा दें और इस मन्त्र से रोली के छींटे देकर पूजन करें।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

सब वस्तुएं चढ़ा हाथ जोड़कर इस मन्त्र द्वारा नमस्कार करें।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।

चन्द्र-पूजन

हाथ में फूल, चावल लेकर बोलें–

हिमरश्मि निशानाथं तारकापतिमुत्तमम्। ओषधीनां च राजानं चन्द्रं आवाहयाम्यहम्।

इस मन्त्र से रोली के छींटे देते हुए पूजन करें–

इमंदेवा असपत्न ꣳ सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्यन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

सभी वस्तुएं चढ़ाकर इस मन्त्र से हाथ जोड़ें।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भद्रवम्। ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥ श्रीचन्द्रदेवाय नमः।

भौम (मंगल)–पूजन

हाथ में फूल, चावल लेकर आवाहन करें।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

फूल, चावल चढ़ाकर रोली के छींटे अगले मन्त्र द्वारा दें।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥

अगले मन्त्र से–

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

जल, चन्दन, चावल चढ़ाकर अगले मन्त्र द्वारा हाथ जोड़ें।

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च भौमदेवं नमाम्यहम्॥

बुधस्य पूजन

हाथ में पुष्प, चावल लेकर आवाहन करें।

बुधंबुद्धिप्रदातारं होमवंशप्रवर्धनम्। यजमानहितार्थाय बुध आवाहयाम्यहम्॥

हाथ की वस्तुएं चढ़ाकर अगले मन्त्र से रोली के छींटे दें।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सः ꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

अगले मन्त्र से सामग्री चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

हाथ जोड़ें।

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधमावाहयाम्यहम्॥

बृहस्पत्यावाहन

हाथ में फूल, चावल लेकर ध्यान करें।

ॐ गुरुं श्रेष्ठांगिरः पुत्रं देवानां च पुरोहितम् शुक्रस्य मन्त्रिणांश्रेष्ठं गुरुं आवाहयाम्यहम्॥

पुष्प और चावल चढ़ाकर रोली के छींटे अगले मन्त्र से दें।

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

अगले मन्त्र से जल, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्यादि चढ़ायें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

अगले मन्त्र से हाथ जोड़ें।

देवानाञ्च वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् गुरुं काञ्चनसन्निभम्॥ श्री गुरवे नमः।

शुक्र पूजन

हाथ में पुष्प और चावल लेकर ध्यान करें।

प्रविश्य जठरे शम्भोर्निष्क्रान्तः पुनरेव यः। आचार्यम-सुरादीनां शुक्रं आवाहयाम्यहम्॥

पुष्प, चावल चढ़ाकर रोली से पूजन करें।

अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपि बत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपान ॐ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

अगले मन्त्र से वस्तुएं चढ़ावें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

अब हाथ जोड़ें।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥ श्रीशुक्राय नमः।

शनि पूजन

हाथ में पुष्प, चावल लेकर आवाह्न करें।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

चावल, फूल चढ़ाकर रोली के छींटे दें।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥

अगले मन्त्र से–

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

अब हाथ जोड़ें।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

राहु पूजन

हाथ में फूल, चावल लेकर ध्यान करें।

ॐ चक्रेण छिन्नमूर्द्धानं विष्णुना च निरीक्षितम्। सैहिकेयं महाकायं राहुमावाहयाम्यहम्।

इसके पश्चात् रोली के छींटे दें।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठयावता॥

अब सामग्री चढ़ायें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

अब हाथ जोड़ें।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।

केतु पूजन

हाथ में पुष्प, चावल लेकर आवाहन करें।

ॐ ब्रह्मणः कुलसम्भूतं विष्णुलोकभयावहम्। शिखिनन्तु महाकायं केतुमावाहयाम्यम्॥

रोली के छींटे दें।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे। समुषद्भिर-जायथाः।

पश्चात् जल, नैवेद्यादि सामग्री चढ़ायें।

ॐ पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयम् (पूर्ववत्)

अब हाथ जोड़ें।

पालाशधूम्र संकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

हाथ जोड़कर समस्त ग्रहों को नमस्कार करें।

ॐ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

ऋषि पूजन

अब अपने हाथों में चावल, घास (दूर्वा) देकर ऋषि पूजन करते समय नीचे लिखा मन्त्र पढ़ें।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥१॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्। धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥२॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहु केतु नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥३॥ शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनीश्चैव तपोधनान्। गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥४॥ वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम्॥५॥ विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः। तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा॥६॥

हाथ की वस्तुओं को देवताओं पर चढ़ा दें और फिर चावल हाथ में लेकर दसों दिशाओं में इन श्लोकों द्वारा थोड़ा-थोड़ा फेंकते रहें।

दिग्रक्षण : ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। याम्यां रक्षतु वाराहो नृसिंहश्च तु नैर्ऋते॥१॥ वारुण्यां केशवो रक्षद् वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षे दीशाने तु

गदाधरः॥२॥ ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेत् अधस्ताच्च त्रिविक्रमः। एवं दशदिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः॥३॥

इस मन्त्र से यजमान पुरोहित के तिलक करें।

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

इस मन्त्र से यजमान पुरोहित के हाथ में कलाया बांधें।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

इस मन्त्र से पुरोहित यजमान के हाथ में रक्षाबंधन करें।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वाम नुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

पुरोहित इस मंत्र द्वारा यजमान को पुष्प, चावल से आशीर्वाद प्रदान करें।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

ॐ आयुष्कामः यशस्कामः पुत्रकामस्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।

इसके उपरान्त अग्नि प्रज्ज्वलित कर तथा निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें–

अग्नि प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेद हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

फिर हाथों में पुष्पाञ्जलि लेकर अग्नि का आवाहन करते हुए प्रज्ज्वलित करें।

इसके उपरान्त यज्ञ में आहुतियां प्रदान करें। (घी से आहुति दें।)

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। (मन में बोलें)

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय न मम।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदं अग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। (सामग्री छोड़ें।)

ॐ भू स्वाहा, इदं अग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

एता महाव्याहृतयः।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य-हेडो-ऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषासि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदं अग्नि-वरुणाभ्यां न मम।

ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽबतो-भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याउषसो व्यष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुवहो नऽएधि स्वाहा। इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्ति पाश्च सत्वमित्वमया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳस्वाहा। इदं अग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततता महानतस्ते-भिर्नो अद्य सवितोत विष्णर्विश्वे मुचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाश-मस्मद-बाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथाब्बयमादित्य ब्रते तवानगसो-ऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्या-दितये च न मम। एताः सर्वाः प्रायश्चित-संज्ञका।

ॐ गणपतये स्वाहा। इदं गणपतये न मम।

ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे न मम।

ॐ शंभवे स्वाहा। इदं शंभवे न मम।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै न मम।

ॐ भूम्यै स्वाहा। इदं भूम्यै न मम।

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।

ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय न मम।

ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय न मम।

ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृस्पतये न मम।

ॐ शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय न मम।

ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय न मम।

ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे न मम।

ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे न मम।

ॐ व्युष्टयै स्वाहा। इदं व्युष्टयै न मम।

ॐ उग्राय स्वाहा। इदं उग्राय न मम।

ॐ शतक्रतवे स्वाहा। इदं शतक्रतवे न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। (मानसिक)

ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्ट कृते न मम।

ॐ सूर्यो ज्योर्तिज्योति सूर्यः स्वाहा।

ॐ सूर्यो वर्चो ज्योर्तिर्बर्चः स्वाहा।

ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो बेतु स्वाहा।

ॐ अग्निर्ज्योतिज्योति र्ज्योतिरग्नि सूर्य स्वाहा।

ॐ अग्निवर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा।

ॐ अग्निर्ज्योतिः र्ज्योतिरग्नि स्वाहा।

ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरा-येन्द्रवत्या जुषाणो ऽअग्निर्वेतु स्वाहा।

इसके उपरान्त अपने मन्त्र का जप करते हुए अग्नि में आहुतियां प्रदान करनी चाहिए।

तद्पोपरान्त स्रुव में सुपारी इत्यादि अथवा सूखा गोला, जिसमें सामग्री भरी हो, उससे पूर्णहुति देनी चाहिए। पूर्णाहुति के समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ꣳ संम्राजम-तिथिं जनाना-मासन्ना पात्रं जनयन्त देवा स्वाहा।

इस प्रकार पूर्णाहुति प्रदान करें। इसके साथ ही न्यूनतापूर्ति के लिए प्रार्थना करें–

"ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वा सप्त ऋषय, सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनीरा पृणस्व धृतेन स्वाहा।।"

अन्त में निम्नांकित वाक्य कहकर किया गया हवनकर्म भगवती को अर्पित करें।

"अनेन होमकर्मणा श्री बगलामुखीः प्रीयताम् न मम। श्री पीताम्बरार्पणामस्तु।"

बलिदान

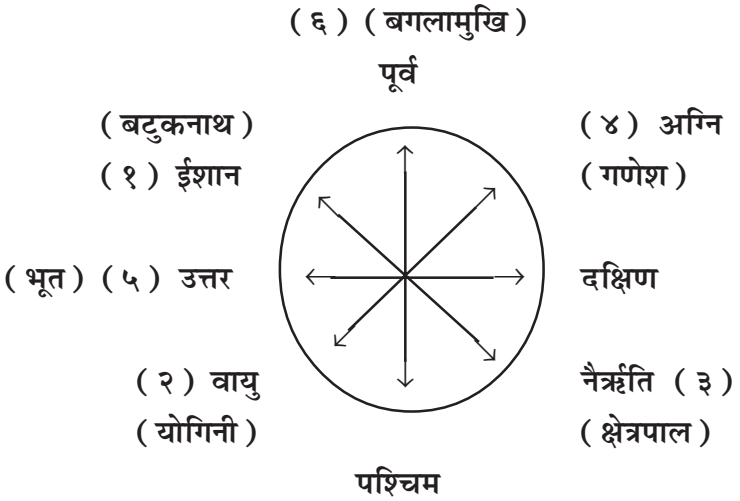

बलि हेतु मुद्राएं

(१) **बटुक** : अंगूठे को अनामिका से मिलाएं।

(२) **योगिनी** : तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे को मिलाएं।

(३) **क्षेत्रपाल** : अंगूठे को तर्जनी से मिलाएं।

(४) **गणेश** : अंगूठे को मध्यमा से मिलाएं।

(५) **भूत** : सभी अंगुलियों को मिलाएं।

बलि विधान

(१) त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्रमण्डल बनाकर **"ॐ आधार शक्तये नमः"** पूजन करें। फिर बलि पात्र की स्थापना कर **"ॐ बलि द्रव्याय नमः"** कहकर गन्ध, पुष्प आदि से पूजन करें तथा मुद्रा बनाकर बलि स्वीकार करने हेतु बटुक भैरव से प्रार्थना करें–

"एहि एहि देवि पुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृहण गृहण स्वाहा।" बटुकाय एष बलिर्न मम।

(२) **"यां योगिनीभ्यो नमः"** से योगिनिओं की पूजा कर उन्हें तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे से मुद्रा बनाकर, बलि स्वीकार करने हेतु विनती करें–

"ॐ ॐ ॐ सर्वयोगिनीभ्यः सर्वडाकिनीभ्यः सर्वशाकिनीभ्यः त्रैलोक्यवासिनीभ्यो नमः। इमं पूजाबलिं गृहणीत हुं फट् स्वाहाः, सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा।" योगिनीभ्यः एष बलिर्न मम। जल अर्पित कर प्रणाम करें।

(३) **"क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपाल बलि मण्डलाय नमः, क्षेत्रपाल बलि द्रव्याय नमः।"** ऐसा बोलकर गन्ध, पुष्प आदि से क्षेत्रपाल की पूजा करें। अंगूठे और तर्जनी को मिलाकर मुद्रा बनाएं और क्षेत्रपाल से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

"ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहाः, क्षेत्रपालाय एष बलिर्न मम।" जल देकर प्रणाम करें।

(४) **"ॐ गं गणपतये नमः, गणपति बलिमण्डलाय नमः"** ऐसा बोलकर गन्ध, पुष्पादि से गणपति की पूजा करें। फिर अंगूठे और मध्यमा को मिलाकर मुद्रा बनाएं और गणपति से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

"ॐ गां गीं गूं गैं औं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहा।" गणपतये एष बलिर्न मम। जल देकर प्रणाम करें।

(५) पूर्व की भांति मण्डल बनाकर पूजन करें। साधार बलिदान स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें– सभी अंगुलियों को मिलाकर मुद्रा बनाते हुए– **ह्लीं सर्वविघ्नकृदभ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। सर्वभूतेभ्यो एष बलिर्न मम।**

(६) तदोपरान्त हाथ-पैर धोकर भगवती को योनि मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए प्रणाम करके आरती कर उन्हें पुष्पाञ्जलि अर्पित करें–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वरि॥

पुनः प्रदक्षिणा करके नमस्कार करें। फिर यन्त्र बनाकर पूजन करें और बलि स्थापना कर भगवती से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं हुं ह्लीं बगलामुखि सर्वशत्रु स्तम्भिनी सर्वराज वशंकरी एष ते बलिं गृहण गृहण ममाभीष्ट कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा। बगलाय एष बलिर्न मम।" ऐसा कहकर भगवती को विशेष अर्घ्य प्रदान करें। (शहद, मिश्री, गाय का दूध, केसर व अदरक से मिलकर विशेष अर्घ्य बनता है।

अब उच्छिष्ट भैरव को बलि प्रदान करें–

"ॐ उच्छिष्ट भैरव एहि एहि बलिं गृहण गृहण हुं फट् स्वाहा। और प्रणाम करें।

अब पूजा गृह से बाहर जाकर बटुक वाहन को बलि प्रदान करें– एक चतुरस्त्रमण्डल बनाकर उसमें बलि रखकर बटुक वाहन को प्रदान करें–

"बटुक वाहन इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।" तथा जल छिड़कें।

तद्परान्त हाथ-पैर धोकर पूजागृह में प्रवेश कर आसन पर बैठकर आचमन कर शान्ति पाठ करें। फिर निर्माल्य सहित नैवेद्य की बलि प्रदान करने हेतु उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करें तथा बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

"ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालिनी मातंगिसर्वजनवशंकरी इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।"

इसके उपरान्त अज्ञानवश हुई त्रुटि के लिए माँ भगवती से प्रार्थना करें–

प्रार्थना

ॐ यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजामर्चां न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि।।
कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां दृष्टि त्वं परमेश्वरि।।
मातर्योनि-सहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वचला भक्तिर-व्ययाऽस्तु सदा त्वयि।।

देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत्।
देवी जयति सर्वत्र या देवी साऽहमेव च॥
ॐ रश्मिरूपा महेशान्याश्चात्र पूजित देवताः।
पीताम्बरांगे लीनास्ताः सन्तु सर्वं सुखावहा॥
ॐ तिष्ठ तिष्ठ परंस्थान स्वस्थानं परमेश्वरि!।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि॥
यदक्षर-पद-भ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत् सर्वं क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरी॥

इस प्रकार भगवती से क्षमा-प्रार्थना करने के उपरान्त अग्रिम मन्त्र बोलते हुए परिक्रमा करें–

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानी च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे॥

इसके बाद आचमनी से जल छोड़ते हुए **"अनया पूजया श्री महामाया बगलामुखी प्रियताम्।"** ॐ तत्सत् बोलकर भगवती को दण्डवत् प्रणाम करें।

卐